8-11-68

आत्मायें पिताश्री शिव बाबायाद है?

शिव बाबा जानते हैं यह हमारे बच्चे आत्मायें हैं। तुम बच्चों को भी अपने को आत्मा समझ शरीर को भूल शिव बाबा को याद करना है। जो शिव बाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को पढ़ता हूं। शिव बाबा भी निराकार है, तुम आत्मायें भी निराकार हो। यहां आकर पार्ट बजाते हो। बाप भी आकर पार्ट बजाते हैं। यह भी तुम जानते हो ड्रामा प्लैन अनुसार बाप आकर हमको गुल2 बनाते हैं तो सभी अवगुणों को छोड़ गुणवान बनना चाहिए। गुणवान कब किसको दुःख नहीं देते। सुना-अनसुना नहीं करना चाहिए। किसको दुःख है तो वह दुःख दूर करने करने का है। बाप भी आते हैं तो सारी दुनिया के दुःख जरूर दूर होनी है। बाप तो श्रीमत देते हैं। जितना हो सके पुरुषार्थ कर सभी के दुःख दूर करते रहो। पुरुषार्थ से ही अच्छा पद मिलेगा। पुरुषार्थ न करने से पद कम हो जायेगा। वह फिर कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है। बाप को तो बच्चों को हर बात समझानी होती है। बच्चे अपने को घाटा डाले बाप यह नहीं चाहता। दुनिया इन फायदे और घाटे को नहीं जानती। इसलिये बच्चों को अपने पर रहम करना है श्रीमत पर चल। मल बुद्धि इधर-उधर भागती है तो कोशिश करो। हम ऐसे बेहद के बाप को क्यों नहीं याद करते हैं। जिस याद से ही ऊंच पद मिलता है। कम/कम से स्वर्ग तो जाते हैं। परन्तु स्वर्ग में भी ऊंच पद पाना है। बच्चों के मां-बाप होते हैं, कहते हैं ना हमारा बच्चा स्कूल में पढ़कर ऊंच पद पावे। यहां तो किसको भी पता नहीं पड़ता। तुम्हारे मिट-मायट (मित्र-सम्बन्धी) यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। उस पढ़ाई में तो मिट मायट आदि सभी जानते हैं। इसमें कोई जानते हैं कोई नहीं जानते हैं। कोई का बाप जानता है तो भाई नहीं जानता, कोई की मां जानती है तो बाप नहीं जानता। क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई है ना। विचित्र बाप ही पढ़ाते हैं। और तो सभी देहधारी देहधारियों को ही पढ़ाते हैं। यह है विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला। नम्बरवार समझते हैं। बाप समझाते हैं भक्ति तो तुमने बहुत ही की है। अथाह की है। सो भी नम्बरवार। जिन्होंने बहुत भक्ति की है वही फिर यह ज्ञान भी लेते हैं। अभी भक्ति की रसम-रिवाज पूरी होती है। आगे भोग के लिये कहा जाता था उसने लोक-लाज कुल की मर्यादा छोड़ी। यहां तो तुमको सारे विकारी कुल की मर्यादा छोड़नी है। बुद्धि से सभी का सन्यास करना है। इस विकारी दुनिया का कुछ भी अच्छा ही नहीं लगता है। छी छी कर्म करने वाले बिल्कुल ही अच्छे नहीं लगते हैं। वह आपस में तकदीर को खराब करते हैं। ऐसा कोई बाप थोड़े ही होगा जो बच्चों को किसको तंग करता हुआ देख पसन्द करेगा वा न पढ़ना पसन्द करेगा। तुम बच्चे जानते हो वहां कोई ऐसे बच्चे होते ही नहीं। नाम ही है देवी-देवतायें। कितना पवित्र नाम है। अपनी जांच करनी है हम में दैवीगुण है। सहनशील भी बनना होता है। लड़ाई में कितना सहनशील बनते हैं। यह तो है योधे लोगों की बात। यह लड़ाई तो बड़ी मीठी है। बाप को याद करने में कोई लड़ाई की बात नहीं है। बाकी हां इसमें माया विघ्न डालती है। इनकी सम्भाल करनी होती है। माया पर विजय तो हमको ही पानी है। तुम जानते हो हम कल्प2 जो कुछ करते आये हैं बिल्कुल एक्युरेट वही पुरुषार्थ चलता है। जो कल्प2 चलता आता है। सतयुग में तुम जानते हो हम पदमापदमभाग्यशाली बनते हैं। अथाह सुखी रहते हैं। ऐसे सुखों को लात मत मारो। कल्प2 बाप ऐसे ही समझाते हैं। यह कोई नई बात नहीं। यह तो बहुत ही पुरानी बात है। बाप तो चाहते हैं बच्चे पूरा गुल2 बनें। लौकिक बाप की भी दिल होगी ना हमारे बच्चे गुल2 बनें। पारलौकिक बाप तो आते ही हैं कांटों को फूल बनाने। तो ऐसा बनना चाहिए ना। मनसा वाचा कर्मणा। जबान पर भी बहुत खबरदारी चाहिए। हरेक कर्मेन्द्रियों पर बड़ी खबरदारी चाहिए। माया बहुत धोखा देने वाली है। इनकी पूरी सम्भाल रखनी है। बड़ी मंजिल है। आधा कल्प से क्रिमनल दृष्टि बनी है। इनको एक ही जन्म में सिवील बनानी है जैसे इन लक्ष्मी नारायण के हैं। यह सर्वगुण सम्पन्न .... हैं ना। वह क्रिमनल दृष्टि होती नहीं। रावण ही नहीं। यह कोई नई बात नहीं। तुमने अनेक बार यह पद पाया है। दुनिया को तो बिल्कुल ही पता नहीं है कि यह क्या पढ़ते हैं। बाप तुम्हारी शुभ आशा पूरी करने आते हैं। अशुभ आशायें ——

11

रावण की होती है। तुम्हारी है शुभ आशाएं। क्रिसमस
है। बच्चों को। तुम्हारे अथाह सुखों का वर्णन नहीं कर सकते। दुःखों का वर्णन होता है। सुख का वर्णन थोड़ेही होता है। तुम सभी बच्चों की एक ही आशा है पावन बनने। कैसे पावन बनेंगे सो तो तुम जानते हो। फर्स्टनं० नई दुनिया में पावन तो यह देवी-देवताएं ही हैं। पावनबनने में ताकत देखो कितनी है। तुम पावन बन पावन दुनिया का राज्य पाते हो। इसलिये कहा जाता है इस देवता धर्म में ताकत बहुत है। यह ताकत कहां से मिलती है? सर्वशक्तिवान बाप से।

घर-घर में तुम दो चार मुख्य चित्र रखो बहुत सर्विस कर सकते हो। वह समय आवेगा करफ्यु आदि ऐसे लग जावेंगी जो तुम कहां भी आ जा नहीं सकोगे। तुम हो ब्राह्मण सच्ची गीता सुनाने वाले। नालेज तो बड़ी सहज है। जिनके घर वाले सभी आते हैं, शान्ति लगी पड़ी है। उन्हों के लिये तो बहुत सहज है। दो चार मुख्य चित्र रखो। यह त्रिमूर्ति गोला झाड़ और सीढ़ी का चित्र यह बिल्कुल काफी है। इनके साथ गीता का भगवान कृष्ण नहीं वह भी चित्रअच्छा है। कितना सहज है। इन में कोई पैसा खर्चा नहीं होता। चित्र तो रखो ही हैं। चित्रों को देखने से भी ज्ञान स्मृति में आता है। कोठरी बनी पड़ी हो। उसमें भल तुम सो भी जाओ। अगर श्रीमत पर चलते रहे तो। तो तुम बहुतों का कल्याण कर सकते हो। कल्याण करते भी होंगे। फिर भी बाप रिमाईन्ड कराते हैं ऐसे2 तुम कर सकते हो। ठाकुरों की मूर्ति रखते हैं ना। इसमें तो फिर है समझाने की बात। जन्म-जन्मान्तर तुम भक्ति मार्ग में मंदिरों में भटकते रहे हो परन्तु यह पता नहीं है कि यह है कौन। मंदिरों में देवियों की पूजा करते हैं उनको ही फिर पानी में जाकर डूबोते हैं। कितनी अथाह मूर्खता है। कितना खर्चा करते हैं। गुड्डियों का खेल करते हैं। रचयिता भी बनते हैं-फिर उनकी पालना भी ...फिर उनका विनाश कर्ता भी बन जाते हैं। इसलिये अपने को भगवान कहते हैं। एक्ट ही ऐसी करते हैं। कई तो रोते भी हैं, हू बहू जैसे मूर्दे को श्मशान में ले जाते हैं तो रोते हैं ना। यह भी देवियों को जब डूबोने ले जाते हैं तो बहुत रोती है। कितना अज्ञान है। पूज्य की पूजा करफिर उनको उठाकर समुद्र में डाल देते हैं। गणेश को, लक्ष्मी को, सरस्वती को भी डूबोते हैं। कितनी मूर्खता है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, कल्प2 यह बातें समझाते हैं। भक्ति मार्ग में कितनी दुर्गति मार्ग का काम करते हैं। है जड़-चित्र। परन्तु उनमें भावना कितनी हैं। कितना रोते हैं। नहीं तो रोना होता है चैतन्य के लिये। जड़ के लिये थोड़ेही रोना होता है। परन्तु उन्हों का भाव ऐसा है। कोई समझाने वाला तो है नहीं। बाप आकर रीयलाईज कराते हैं। तुम यह क्या कर रहे हो। बच्चों को तो नफ़रत आनी चाहिए जब कि बाप इतना समझाते रहते हैं। मीठे2 रूहानी बच्चों तुम यह क्या करते हो। इनको कहते ही हैं विषय वैतरणी नदी। ऐसे नहीं वहां कोई क्षीर का सागर है। परन्तु हर चीज वहां ढेर होती है। कोई चीज पर पैसे नहीं लगते। पैसे तो वहां होते ही नहीं। सोने के ही सिक्के वहां देखने में आते हैं जब कि मकान में ही सोना लगता है। सोने की ईंटें लगती हैं। तो सिद्ध होता है वहां तो सोने चांदी का मूल्य ही नहीं। यहां तो देखो कितना मूल्य है। चांदी का ताला सात रुपये कब सुना? इसको कहा जाता है पिछाड़ी। सो भी तुम बच्चे जानते हो। एक एक बात में वन्डर है। मनुष्य तो मनुष्य ही हैं। यह (देवताएं) भी मनुष्य हैं परन्तु इनका नाम है देवता। इन्हों के आगे मनुष्य अपनी गंदगी जाहिर करते हैं। हम पापी नीच हैं। हमारे में कोई गुण नहीं है। तुम बच्चों की बुधि में अभी एक आबजेक्ट है। हम यह मनुष्य से देवता बनते हैं। देवताओं में देवीगुण हैं यह तो सभी समझते हैं। मंदिरों में जाते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि यह भी तो मनुष्य ही हैं हम भी मनुष्य हैं परन्तु यह देवीगुण वाले हैं, हम आसुरी गुण वाले हैं। अभी तुम्हारी बुधि में आता है हम कितने नालायक थे। इन्हों के आगे जाकर गाते थे आप सर्वगुण सम्पन्न .... अभी बाप समझाते हैं यह पास्ट होकर गये हैं इनमें देवीगुण थे। अथाह सुखी थे। वही फिर अथाह दुःखी बने हैं। राधे के भक्त कहेंगे सर्वव्यापी राधे ही राधे है। कृष्ण के भक्त फिर कहेंगे कृष्ण ही कृष्ण है। ऐसे कहते2 भगवान को भी सर्वव्यापी कह दिया है। अभी बाप बैठ समझाते हैं सभी में 5 विकारों की —

अभी तुम विचार करते होकैसे हम ऊपर से गिरते2 एकदम पट आकर पड़े हैं। भारतवासी कितना साहुकार थे। अभी तो देखो कर्जा उठाते रहते हैं। और कोई बता न सके। यह सभी बातें बाप ही समझाते हैं। ऋषि मुनि भी नेती2 कहते थे, अर्थात हम नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो वह तो सच्च कहते थे। न बाप को न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते थे। अभी भी कोई नहीं जानते हैं सिवाय तुम बच्चों के। बड़े2 सन्यासी महात्मा कोई नहीं जानते। वास्तव में महानआत्मा तोयह (ल०ना०) हैं ना। एवर पवित्र हैं। यहभी नहीं जानते थे तो और कोई कैसे जान सकते थे। कितनी सहज बातें बाप बैठ समझाते हैं। परन्तु कई बच्चे भूल जाते हैं। कई अच्छे रीत गुण धारण करते हैं तो मीठे लगते हैं। जितना बच्चों में मीठा गुण देखते हैं तो दिल खुश होती है। कोई तो नाम बदनाम कर देते हैं। यहां तो फिर बाप टीचर सदगुरु है। तीनों की निन्दा कराते हैं। सत बाप, सत टीचर सत गुरु की निन्दा कराने से फिर ट्रबल दण्ड पड़ जाता है। परन्तु कई बच्चों में कुछ भी समझ नहीं है। बाप समझाते हैं ऐसे भी होंगे जरूर। माया भी कोई कम नहीं है। वह भी बराबर शक्तिवान है। आधा कल्प पापात्मा बनाती है। बाप फिर आधा कल्प लिये पुण्यात्मा बनाते हैं। वह भी नम्बरवार बनते हैं। बनाने वाले यह दो हैं। राम और रावण। राम परमात्मा को ही कहते हैं। राम राम कह फिर पिछाड़ी में शिव को नमस्कार करते हैं। वही परमात्मा हैं। परमात्मा के नाम गिनते हैं। तुमको तो गिनने की दरकार नहीं। बाप कहते हैं सिर्फ निरन्तर याद करते रहो तो तुम्हारे पाप कटते जावेंगे। सिवाय योग के और कोई उपाय है नहीं। यह ल०ना० पवित्र थे ना। इन्हीं की दुनिया थी जो पास्ट हो गई है। इसको स्वर्ग नई दुनिया कहा जाता है। फिर जैसे पुराना मकान होता है तो टूटने लायक बन जाता है। यह दुनिया भी ऐसी है। अभी है कलियुग के पिछाड़ी। कितनी सहज बातें समझने की धारण करने और कराने की है। बाप तो सभी को समझाने लिये नहीं जावेगा। तुम बच्चे आन गॉडली [illegible] पर हो। बाप जो सर्विस सिखलाते हैं हम वही सर्विस करते हैं। उन्हीं की है डाग्लीसर्विस ~~आन्ली~~= आनली। तुम्हारी है गाडली सर्विस ~~आन्ली~~= आनली। वह डाग विचिज बनाते हैं। तुम गाड गाडेस बनाते हो। इसलिये मन्दिर वन्देमातरम गाया जाता है। माता के साथ पिता भी है ना। तुम्हारा नाम ऊंच करने लिये बाबा ने कलश तुम माताओं को दिया है। ऐसे नहीं कि पुरुषों को नहीं मिलता है। मिलता तो सभी को है। तो बाप बैठ समझाते हैं भक्ति है दुर्गति। देवताओं के चित्र से भी पूरापा नहीं होता तो फिर बुध क्राईस्ट आदि सभी के चित्र बैठ इकट्ठे करते हैं। इनको कहा जाता है व्यभिचारी भक्ति। हनुमान की भी पूजा करेंगे। तो गणेश की भी पूजा, टिबाटे की पूजा करते हैं। तमोप्रधान मनुष्यों की भी बैठ पूजा करते हैं। इनको कहा जाता भूत पूजा। ईश्वरीपूजा, फिर देवी पूजा, फिर है भूत पूजा। अभी पूजाएं भी सबपूरी होती हैं। वहां पूजाओं आदि की होलीडे होती नहीं। हरेक गांव के ही भिन्न2 रसम रिवाज होती हैं। अष्ठमी के दिन नेपाल में कत्लाम होता है। जितना साहुकार उतना बड़ा जानवर का शिकार करेंगे। पाड़े को तलवार से मारते हैं। मार ही मार चलती है। छोटे बच्चे से भी मरवाते हैं। यह है रसम। आगे मनुष्यों की बलि चढ़ती थी। वह भी गवर्मेन्ट ने बन्द किया है। मनुष्यों के मांस को महाप्रसादसमझ बांटते थे वह फिर खाते भी थे। अभी बकरे का महाप्रसाद समझते हैं। तो यह सब राक्षस ठहरे ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हम कितने सुखी स्वर्गवासी थे। वहां कोई दरिद्रता नहीं थी। अभी है संगम युग। फिर हम उस नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं। अभी है कलियुग पुरानी पतित दुनिया। बिल्कुल ही जैसे भैंस बुध मनुष्य हैं। कुछ भी समझते नहीं। क्या2 अखबारों में समाचार पड़ते हैं। कल बाबा ने अखबार में देखा एक 25 वर्ष का साधु जवान एकसाहुकार के बच्ची को भगाकर ले जाता थे। पुलिस को पता पड़ गया झट पकड़ लिया। ऐसी2 बातें तो ढेर पड़ती हैं। महारथी एरापलेन में चक्र लगाते हैं यह करते हैं। यहां तो इन सभी बातों को भूलना पड़ता है। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ अपने को आत्मा समझना है। शरीर में आत्मा न है तो शरीर कुछ भी कर न सके। इन शरीर पर कितना मोह रखते हैं। शरीरजल गया, आत्मा ने जाकर दूसरा शरीर लिया तो भी 12मास याहुसेन मचाते रहते हैं। अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है तुम्हारी—

आत्मा शरीर छोड़ती है तो जरूर बहुत ऊंच घर में जन्म लेंगी। क्योंकि तुम ऊंच कुल के बनते हो ना। वहभी नम्बरवार। थोड़े ही ज्ञान वाला साधारण घर में जन्म लेंगे। ऊंच ज्ञान वाला तो बहुत ऊंच कुल में जन्म लेगा। वहां सुख भी बहुत मिलताहै। बाप तुम्हारी महिमा करते हैं। क्योंकि तुम अपरमअपार सुख भोगते हो। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। बाप तुम्हारी महिमा करते हैं। क्योंकि तुम अपार सुख भोगते हो। बेहद के बाप से बेहद का सुख मिलता है। कल की बात है ना। शास्त्रों ने तो मनुष्य को बिल्कुल ही घोर अंधियारे में डाल दिया है। अभी फिर बाप घोर-सोझरे में ले जाते हैं। तुम सभी को यही समझाते हो बेहद के बाप को याद करो तो यह वरसा मिलेगा। स्वर्ग में चले जावेंगे। अभी नर्कवासी वेश्यालय का धंधा छोड़ दो तब ही शिवालय में जावेंगे। सो भी एक जन्म लिये कहते हैं पवित्र बनो। 63 जन्म तो तुम गंद में पड़े अभी मैं तुमको स्वर्ग में ले जाता हूं। तो तुम मेरे मददगार बनो। दूसरे को कहे काम महाशत्रु है और खुद काम के वस हो जाये तो उनको क्या कहेंगे। ऐसे ही महान पापात्मा होते हैं। कई छोड़ भी देते हैं, कई गुप्त रहते हैं। नुकसान तो अपना ही करते हैं ना। रजिस्टर बहुत खराब होता है। यहां तुम बैठे हो, तुमको शिव बाबा ही याद है। जानते हो शिव बाबा हमको समझाते हैं। शिव बाबा भी याद रहते हैं और पढ़ाई भी याद रहती है। तुम यहां आते ही हो रिफ्रेश होने। फिर भी सर्विस पर जरूर जाना पड़े। तुम बच्चे अन्दर में फील करते हो हम पदमापदम भाग्यशाली हैं। बाबा ने तुम्हारा नाम रखा है। तुम कितने पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। पदमपति सेठ है ना। आगे इतने साहुकार भारत में नहीं थे। अभी तो बातमत पूछो। इसलिये समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। तुम समझते हो हम महान नर्क में हैं। बाबा तो है गरीब निवाज़। यह भी ड्रामा बना हुआ है। उन्हों के लिये तो यही स्वर्ग है। तुम समझते हो हमको बाबा स्वर्ग में ले जाने लियेआये हैं। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। क्या इतनी मेहनत भी नहीं करेंगे। कैसे भी आराम से बैठो। बुधि से बाप को याद करो। नींद न आनी चाहिए। बाप को याद करते रहो। बाप और वरसा। गीता में भी अक्षर है मन्मनाभव .... देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ मामेकं याद करो तो तुम सभी बच्चों को पापों से मुक्त कर दूंगा। और फिर मद्याजीभव। अर्थात तुम अपने देवी धर्म में चले जावेंगे। देवी-देवताओं का पवित्र प्रवृति मार्ग था ना। फिर 84 जन्मों बाद क्या बन गये हैं! फर्क तो है ना। अभी फिर चेंज होना है। विनाश का सा० भी बहुतों को होता है। एक तो ब्रह्मा का, विनाश का, और फिर कृष्ण का सा० होता है। तुम यहां नर से ना० बनने आये हो। परन्तु पहले तो प्रिन्स बनेंगे ना। कृष्ण का चित्र मोर-मुकुट से दिखाया है। राधे को मुकुट आदि नहीं देते। तो वही सा० होता है। आगे चल तुमको भी सा० होते रहेंगे। ब्रह्मा का सा० होगा, कहेंगे तुम इन ब्राह्मणों के पास जाओ तो ब्राह्मण तुमको देवता बनावेंगे। शुद्र से ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण से देवता तुम बनते हो। यह बाजोली याद करो तो भी तुम पदमापदम भाग्यशाली बन सकते हो। कितना सहज है। यहां अच्छी रीत सुनते हैं। बाहर निकल फिर खोली खाली कर देते हैं। छेद से सब बह जाता है। कोई धारण कर और कराते हैं। कोई न धारणा करते हैं, न करा सकते हैं। कोई तो बहुत ही खुशी से जाते हैं। कोई को मित्र-सम्बन्धी आदि याद पड़ते हैं। कच्चे होने कारण बुधियोग उस तरफ चला जाता है। एक तरफ सर्विस करते हैं, फिर मां-बाप कहेंगे चलो घर। तो जरूर बुधियोग जावेगा। सर्विस से बुधि हट जाती है। ऐसे भी कई बच्चों के माता-पिता होते हैं। उनको कहेंगे निभागे। क्योंकि वह अपना भाग्य बना रहा है, उनको खेंच कर ले जाते हैं। ज्ञान नहीं है ना। जितना देरी करेंगे वे विकर्माजीत बन न सकेंगे। बहुत हैं जिनको कोशिश रहती है। बहुतों की सर्विस करते रहते हैं। बाप तो कितना क्लीयर कर समझाते रहते हैं।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

****

सूचना:- सभी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय सेन्टर्स के ध्यान पर हो कि गोपी अजमेर वाली (मनोहर के सम्बन्धी) को वद-चलन कारण कोई भी सेन्टर्स पर आने न देना है।